www.thearyasamaj.org

वर्ष-११ अंक-१ २७ सितम्बर २०१३

ओ३म्

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

वैदिक रवि

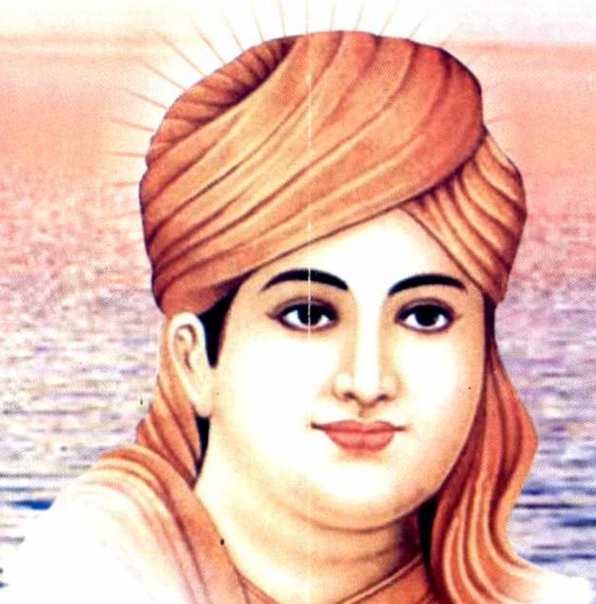

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥

www.thearyasamaj.org

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना:

१. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

(यजु. ३०।३)

२. ओ३म हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. २५।१०)

३. ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यछायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २५ ।१३)

४. ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३५ ।१२)

५. ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३२ ।६)

६. ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

(ऋ सं. १० ।सं. १२१ मं. १०)

७. ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।

(यजु. ३२।१०)

८. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिम विधेम ।।

(यजु. ४० ।१६)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

मासिक

वर्ष-११ अंक-१

२७ सितम्बर २०१३
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१	संपादकीय	१
२	ज्ञान विज्ञान की खोज और भरतीय विद्वान	४
३	मृतक श्राद्ध तर्पण	६
४	चाणक्य-सूत्रावली	१२
५	स्वामी दयानन्द	१३
६	सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातमनम्	१४
७	गायत्री मन्त्र महामन्त्र और गुरूमन्त्र क्यों?	१५
८	बालको के लिए विशेष योजना	१६
९	बाल सन्देश स्तंभ	१७
१०	भगवान को क्यों मानें?	१९
११	वैदिक रवि मासिक पत्रिका हेतु सदस्य सूची	२१
१२	अन्तरंग बैठक सम्पन्न	२२
१३	सभा की ओर से प्रचार कार्य	२३
१४	आर्य समाज देवास की ओर से विनम्र अपील	२४

अक्टूबर माह के पर्व, त्यौहार, दिवस

2 अक्टूबर	-	गांधी जयंती अहिंसा दिवस
5 अक्टूबर	-	रानी दुर्गावती जयंती
8 अक्टूबर	-	वायुसेना दिवस
10 अक्टूबर	-	राष्ट्रीय डाक दिवस
11 अक्टूबर	-	लोकनायक जयप्रकाश नारायण जयंती
14 अक्टूबर	-	विजयादशमी पर्व
18 अक्टूबर	-	शरदपूर्णिमा
24 अक्टूबर	-	संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस
31 अक्टूबर	-	सरदार पटेल जयंती इंदिरा गांधी पुण्य तिथि

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

कैसा था मेरा देश

कोई भी व्यक्ति अपने परिवार, समाज, जाति, संगठन के संबंध में जब उनकी गरिमा, यशोगान को, उसकी तारीफ को सुनता है तो बहुत प्रसन्न होता है, गौरव का अनुभव करता हैं। किन्तु बहुत कम कर्मवीर लोग ऐसे होते हैं जो उस गरिमा को बनाए रखने में या उसमें वृद्धि करने का प्रयत्न करते हैं। केवल पूर्वजों की कमाई पर ही जो सन्तान ऐशोआराम की जिन्दगी बिताना चाहती हैं, वह सुख ज्यादा दिन नहीं चल पाता। कुआं कितना भी बड़ा हो यदि उसमें पानी का श्रोत समाप्त हो जाता है तो कुआं सूखने लगता है। हमने अपनी गौरव गाथा को सुन–सुन कर अपने पूर्वजों की कमाई को ही अपनी उपलब्धि मानकर सबकुछ मान लिया और उसमें ही अपने बडप्पन को मानते हुए अहंकार और गर्व की अनुभूति करने लगे। इसका परिणाम जो होना था वही हुआ, आज शनैः–शनैः हमारा गौरव निश्तेज होता जा रहा है।

भारत किसी समय विश्व गुरू और सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था अर्थात् ज्ञान और सम्पन्नता में इसका सर्वोच्च स्थान था। यहां की प्राकृतिक व भौगोलिकता विश्व में अद्वितीय है यह देवभूमि संस्कारित भूमि के नाम से पहचानी जाती थी। इसके दर्शन के लिए यात्री विदेशों से आते थे। यहां का आध्यात्म, प्राकृतिक छटा, सम्पन्नता और परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान वेद इसकी विशेष पहचान का प्रमुख कारण था। संसार के तमाम ज्ञान पिपासू यहां आकर अपनी ज्ञान पिपासा से तृप्त होते थे। मनु कहते है "**एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वं स्वं चरित्रेण शिक्षरेन पृथिव्यां सर्वा मानवाः।** इसी से प्रभावित होकर विदेशी विद्वान मेक्समूलर ने अपने विचार अपनी पुस्तक "**इण्डिया बॉट केन टीच अस**" में लिखा –

"अगर मैं विश्वभर में से उस देश को ढूँढ़ने के लिए चारों दिशाओं में आँखें उठाकर देखूँ जिस पर प्रकृति देवी ने अपना सम्पूर्ण वैभव, पराक्रम तथा सौन्दर्य खुले हाथों लुटाकर उसे पृथ्वी का स्वर्ग बना दिया है, तो मेरी अंगुली भारत की तरफ उठेगी। अगर मुझसे पूछा जाए कि अन्तरिक्ष के नीचे कौन–सा वह स्थल हैं जहाँ मानव के मानस ने अपने रूप से विकसित किया है, गहराई में उतरकर जीवन की कठिनतम समस्याओं पर विचार किया है, उनमें से अनेकों को इस प्रकार सुलझाया है जिसको जानकर प्लेटों तथा कॉटें का अध्ययन करने वाले मनीषी भी आश्चर्य चकित रह जाएँ

www.thearyasamaj.org

तो मेरी अंगुली भारत की तरफ उठेगी और अगर मैं अपने से पूछूं कि हम यूरोप के वासी, जो अब तक केवल ग्रीक, रोमन तथा यहूदी विचारों से वहल रहे हैं वे किस साहित्य से वह प्रेरणा ले सकते हैं जो हमारे भीतरी जीवन का परिशोध करे, उसे उन्नति के पथ पर अग्रसर करे, व्यापक बनाये, विश्वजनीय बनाये, सही अर्थों में मानवीय बनायें, जिससे हमारे इस पार्थिक जीवन को ही नहीं हमारी सनातन आत्मा को प्रेरणा मिले, तो फिर मेरी अंगुली भारत की तरफ उठेगी। ऐसे एक नहीं अनेक विदेशी विद्वानों ने इस देश की महिमा का उल्लेख किया है।

आज हम कहां हैं, ताज से मोहताज हो गए, फिर भी कभी इस क्षति की ओर ध्यान नहीं दे रहे कभी राष्ट्र के प्रति नहीं सोचते। राष्ट्र एक विशाल परिवार है जिस प्रकार परिवार का प्रत्येक व्यक्ति जब तक परिवार का हितैषी व उसकी सुरक्षा तथा वृद्धि का विचार नहीं रखता तब तक परिवार व्यवस्थित नहीं हो सकता। ठीक उसी प्रकार हर नागरिक जब तक राष्ट्र हितैषी नहीं, तब तक देश की सुरक्षा नहीं, उत्थान नहीं हो जाता।

पूर्वजों के द्वारा अर्जित ख्याति और दूसरों के द्वारा किए गए प्रशंसा प्रमाण पत्रों के कथनों को ही हम अपनी हमेशा की उपलब्धि न मानें। जितना व्यक्तिगत सुरक्षा व लाभों के लिए सोचते हैं, वैसा ही अपने इस देश के लिए भी चिन्तन करने लगें तो आज भी वह सबकुछ पाया जा सकता है जिसके लिए कभी हम दुनियॉं में गौरवान्वित हुए हैं। परन्तु आज दुर्भाग्य यह है कि जो जीवन की अहम बात है, उसे आज ऐसे ही बातों में उड़ा रहे हैं, उसे कोई महत्व ही नहीं दे रहे हैं। जबकि हर नागरिक का इस देश से निकट का संबंध है देश का उत्थान उसका उत्थान है, देश का पतन उसका पतन है। किन्तु इस विचारधारा से दूर राष्ट्र का महत्व केवल निज स्वार्थों तक सिमिटता जा रहा है।

यह पूर्वजों, बलिदानियों, उन तमाम महापुरूषों के प्रति विश्वासघात है यह कृतघ्नता है, उनके राष्ट्र के प्रति संजोये सपनों को हम तोड़ रहे हैं, उनके आदर्शों को अनदेखा कर रहे हैं, उनकी कमाई का दुरूपयोग कर रहे हैं। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि वे जितना छोड़कर गए हम उसे और आगे बड़ाएं, अतीत का भारत और महान बनाएं।

यह सपना थोथे विचारों से, लेखों से, भाषणों से, रैलियों से, जय–जयकार के नारों से या राष्ट्रीय पर्वों की औपचारिकताओं को निभाने से नहीं होगा। इसके लिए प्रत्येक मन को दृढ़ संकल्पित होना पड़ेगा।

www.thearyasamaj.org

हमारे गौरव

ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान

प्राचीन भारत ने गणित तथा ज्योतिष के क्षेत्रों में नए–नए संशोधन करके विश्व की ज्ञान सम्पदा में अभिवृद्धि करके उसे समृद्ध बनाया है। इतना ही नहीं अपितु रसायन शास्त्र जैसे अत्यन्त आधुनिक क्षेत्र में भी अभूतपूर्व योगदान प्रदान किया है। नागार्जुन ऐसे ही एक प्रसिद्ध रसायन शास्त्री थे।

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में पैरी नदी के तट पर बसे बालूका ग्राम में नागार्जुन का जन्म हुआ था। सतपुड़ा की सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं की तलहटी में स्थित यह बालूका ग्राम नागार्जुन की जन्मभूमि था। आपके पिता कौंडिल्य गोत्र में जन्में हुए दक्षिणात्य ब्राह्मण थे। वे अत्यन्त सात्विक भक्त एवं कर्मकाण्डी सज्जन थे।

बालक नागार्जुन जन्म से ही अत्यन्त प्रभावशाली थ। इसलिए अतीव शीघ्रता से अपने वेद–वेदांगों का अभ्यास पूर्ण कर लिया। बड़े होकर आप श्रीपुर जो वर्तमान में सिरपुर नाम का मात्र गांव ही रह गया है, के विद्यालय में अभ्यास करने गए थे। यह बात वि. सं. 57 अर्थात् ईसा की प्रथम शताब्दि की है। उस समय सिरपुर महाकौशल की राजधानी थी। धन–धान्य से समृद्ध इस नगर में एक विश्वविद्यालय भी था, जहां देश विदेश के विद्यार्थी अभ्यास करने आते थे। नागार्जुन ने यहां बौद्ध धर्म का अभ्यास पूर्ण करने के बाद अध्यापक के रूप में नागार्जुन अध्ययन कार्य करने लगे।

इस समय में महाकौशल में भयंकर अकाल पड़ा। बारह वर्षों तक वर्षा न होने के कारण प्रजा भूख से मरने लगी। तब यहां के राजा आर्यदेव ने नागार्जुन से इस समस्या को हल करने के लिए सुझाव मांगा था। क्योंकि नागार्जुन रसायनशास्त्री थे, आपने इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना प्रारंभ किया। आप कुछ दिनों के लिए एकान्तवास में चले गए। एकान्तवास के कुछ दिनों पश्चात आपने राजा को सन्देश भिजवाया कि उनके राज्य में जितना तांबा इकट्ठा हो सकता है उसे वे आश्रम में भेज दें। राजा ने नागार्जुन के सन्देशानुसार कार्य किया। कुछ दिनों पश्चात नागार्जुन ने राजा को आश्रम में बुलाया राजा ने पाया कि भेजे गए तांबे के स्थान पर उनके समक्ष सोने का विशाल ढेर था। नागार्जुन ने राजा को कहा कि वे इस सोने को ले जाकर अन्य देशों में बेचकर अन्न खरीदकर प्रजा में बांटने का कार्य करें। इस प्रकार नागार्जुन ने रसायन शास्त्र की अपनी विशेषता के आधार पर भीषण अकाल की समस्या का समाधान किया।

यह तो निश्चित है कि नागार्जुन एक महान वैज्ञानिक थे। आपने अनेक निम्न श्रेणी के (अल्प मूल्य वाले) धातुओं को सौने में परिवर्तन करने

www.thearyasamaj.org

की पद्धति का संशोधन किया था। आपके रचे हुए "रसहृदय" नामक ग्रंथ में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

नागार्जुन ने आयुर्वेदाचार्य सुश्रुत द्वारा रचित "सुश्रुतसंहिता" का सम्पादन कर उसमें नए अध्याय बढ़ाए थे। आपके रसायन शास्त्र के क्षेत्र में रचित मुख्य ग्रंथ इस प्रकार हैं –

1. रस हृदय 2. रस रत्नाकर 3. रसेन्द्र मंगल

चिकित्सा के क्षेत्र में भी आपका योगदान उल्लेखनीय है। इस क्षेत्र में आपके मुख्य ग्रंथ इस प्रकार हैं – 1. आरोग्य मंजरी 2. कक्ष कन्नतंत्र 3. योगसार 4. योगाष्टक।

आपने पारे का अविष्कार किया। उसमें से भस्म बनाने की पद्धति को भी ढूंढ़ लिया। आप मानते थे कि धातुओं की भस्म का यदि सेवन किया जाए तो शरीर सदा रोगमुक्त रह सकता है।

नागार्जुन एक महान दार्शनिक भी थे। आपका दर्शन शून्यवाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आपने वैदिक और बौद्ध दर्शन में समन्वय करने का भी प्रयास किया है।

बोध कथा –

जैसा दृष्टिकोण, वैसा अन्तःकरण

वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देखा तो सोचा – "कितना सुन्दर स्थान है यह ! यहाँ बैठकर ईश्वर का ध्यान किया करूंगा।"

एक चोर ने उस मकान को देखा तो सोचा – यह तो बहुत अच्छी जगह है ! चोरी का माल यहीं ला कर रखा करूँगा।

एक दुराचारी ने वह मकान देखा तो सोचा – वाह ! यह तो एकदम एकान्त स्थान है। दुराचार करने के लिए इससे उत्तम स्थान और कहाँ मिलेगा ?

एक जुआरी ने उस मकान को देखकर सोचा – आगे से अपने साथियों को यहीं लाऊँगा। न पुलिस का डर, न हवालात में जाने का खतरा ! जहाँ निश्चित होकर जुआ खेलेंगे।

मकान वही था, लेकिन सबने अपने–अपने दृष्टिकोण से उसे अलग–अलग रूप में देखा। जैसा दृष्टिकोण बनाओगें, वैसा ही अन्तःकरण बनेगा। यदि चाहते हो कि मन में उत्तम विचार जगें, तो अपना दृष्टिकोण भी उत्तम बनाओ :–

सब जग ईश्वर–रूप है, भला–बुरा नहिं कोय।
जैसी जाकी भावना, तैसा ही फल होय।।

www.thearyasamaj.org

एक चिन्तन -

मृतक श्राद्ध तर्पण

श्राद्ध और तर्पण करना ही चाहिए किन्तु किनका ?

- प्रकाश आर्य, महू

श्राद्ध व तर्पण तो करना ही चाहिए, यह एक अवश्य किए जाने वाला मानवीय कर्म है। किन्तु श्राद्ध किनका व कब किया जा सकता है यह सोच विचार आवश्यक है तभी उसका महत्त्व है।

जीवन अनेक मान्यताओं को मानते हुए बीत जाता है किन्तु उन मान्यताओं का मूल उद्देश्य क्या हैं, उसे क्यों मानते है, इसकी जानकारी अधिकांश व्यक्तियों को अन्तिम समय तक भी नहीं होती। पीपल, बड़, तुलसी, गाय इन्हें मात्र धार्मिक मान्यताओं के कारण ही इनकी पूजा की जाती है। किन्तु इसके पीछे जो कारण है उससे बहुत कम व्यक्ति परिचित हैं। वास्तव में उपरोक्त चारों की मान्यता का मुख्य कारण उनसे मानव जीवन की अत्यन्त उपयोगिता है। पीपल व बड़ हमेशा ऑक्सिजन देते हैं, तुलसी में पारा है, जो वात, पित्त, कफ का नाश करती है और गाय तो अद्भुत कृति है, जिसके हजारों लाभ है। ये सब जीवन उपयोगी, जीवन रक्षक तत्वों से भरे हैं।

इसी प्रकार अनेक पर्व मनाते तो हैं किन्तु उनके प्रदर्शन तक ही सीमित है, उसको मनाने के पीछे क्या दर्शन है, इसे बहुत कम जानते हैं, किन्तु फिर भी मनाते हैं।

यही स्थिति श्राद्ध के संबंध में है, श्राद्ध के साथ तर्पण शब्द भी बोलने में आता है। श्राद्ध और तर्पण प्रत्येक को करना चाहिए इसका समर्थन मैं भी करता हूं, किन्तु कैसे करना चाहिए ये समझें जो प्रचलित मान्यता से भिन्न है।

श्राद्ध से तात्पर्य श्रद्धा से है। श्र में जो (ा) की मात्रा लगी है वह द्ध के आगे लगा देवें तो श्रद्धा हो जावेगी। श्राद्ध करने वालों में मृतक पितरों के प्रति श्रद्धा होती है। कुछ इसे सामाजिक लाज के कारण करते हैं जो श्राद्ध नहीं मात्र औपचारिकता ही है। इसी प्रकार तर्पण का अर्थ है किसी की इच्छा को पूर्ण कर उसे तृप्त करना।

श्रद्धा भाव से जब हम किसी को तृप्त कर देवें तो उसे श्राद्ध और तर्पण कहते हैं। थोड़ा विचार करें कि जिसके प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए, तृप्त करना चाहते है, वह जीवित है या मृत ?

वस्त्र, भोजन, सेवा, औषधि, धन आदि से तो तृप्त किसी जीवित को ही किया जा सकता है। परन्तु जो शरीर अब नहीं है, जलकर पंचतत्व में विलीन हो गया उसे ये वस्तुओं को कैसे दे सकते हैं ? कैसे उसे तृप्त कर सकते हैं? पुर्नजन्म ले चुकी आत्मा के संबंध में सोचें तो शरीर छोड़कर जो दूसरा शरीर धारण कर चुकी है, अब उस आत्मा का कैसे पता चलेगा कि वह कहां हैं ? कैसे पता चलेगा उसने कौन--सा रूप धारण किया है ? यह भी हो सकता है कि उसको मोक्ष ही प्राप्त हो गया हो। इन परिस्थितियों में हम जिसका तर्पण करना चाहते हैं उस तक कैसे पहुंच पायेगें ? फिर उनके नाम पर दिए जाने वाले पदार्थ, भोजन सामग्री दूसरे उपयोग करते है वह उन तक कैसे पहुंचेगी जिनका कि हमें पता ही नहीं है।

www.thearyasamaj.org

एक बात पर कभी ध्यान नहीं दिया, न कभी किसी ने दिलाया, वह यह कि श्राद्ध करके हम अपने मृतक स्वज़न के शरीर को तृप्त करना चाहते हैं या आत्मा को ? भोजन, वस्त्र, पैसा, अन्य वस्तुएं भौतिक हैं जो शरीर के लिए उपयोगी है, आत्मा का इनसे कोई संबंध नहीं। आत्मा का किसी से कोई रिश्ता नहीं, उसके लिए शरीर ग्रहण करना और त्यागना एक सामान्य प्रक्रिया है। अनन्त शरीरों को संयोग उससे होता रहा और जब तक भोग पूरे नहीं होगें तब तक आगे भी होता रहेगा।

हमें तो यह भी नहीं मालूम कि इस शरीर को छोड़ने के पश्चात किस प्रकार के शरीर को (मनुष्य, पशु, पक्षी, जीव जन्तु आदि) धारण किया है।

हमारी धारणा के विपरीत कर्म व्यवस्था के अनुसार उन्हें मानव जन्म न मिलते हुए और कोई प्राणि की योनी प्राप्त हो गई हो।

और उपरोक्त दोनों स्थिति से हटकर उन्हें सद्गति मोक्ष ही प्राप्त हो गया हो। यह सब हमारे सामने अस्पष्ट है।

किन्तु हम अपने मृत पूर्वजों का श्राद्ध व तर्पण उस स्थिति को मानकर ही करते हैं, उसे अभी भी वैसा ही मान रहे हैं जैसे वे जीवित अवस्था में आपके परिवार के साथ थे। क्या यह मान्यता व तर्पण की स्थिति ठीक है ?

जीव की तृप्ती उसकी मनपसन्द इच्छा पूर्ण होने पर होती है। किन्तु जब हमें उनके पुर्नजन्म की कोई जानकारी ही नहीं है तो उनकी इच्छाओं का कैसे पता चलेगा ? फिर दूसरा पहलू यह भी कि भोजन आदि मृतक शरीर को हम नहीं पहुंचा सकते। शरीर में से आत्मा निकल जावे तो मृत शरीर जो शव हो गया उसे एक बून्द पानी नहीं पिला सकते, अन्न का एक कण उसे नही खिला सकते। जो शरीर चिता पर जलकर भस्म हो गया जिसका अस्तित्व संसार में नहीं है, उसे हम कैसे कुछ खिला सकते हैं ? भोजन का महत्व शरीर के लिए है, आत्मा के लिए नहीं। किसी भी भौतिक वस्तु से आत्मा की संतुष्टि नहीं होती।

वास्तव में तर्पण करने पर जब कोई तृप्त हो जावे तो ही तर्पण करना सार्थक है और वह किसी जीवित व्यक्ति का ही हो सकता है। प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में अनेक जीवित माता–पिता (पितर) अभाव का जीवन बिताते देखे जाते हैं। किन्तु उनके न रहने पर वस्तु भेंटकर भोज या श्राद्ध पक्ष में भोजन करवाकर अपने कर्तव्यों का पालन करते देखा है।

आज वृद्धाश्रमों में बढ़ती संख्या इसी बात का प्रमाण है। पति–पत्नि और बच्चों के बीच सिमटते परिवार आज अपने बेटे, बहुओं, पौते, पौतियों से दूर वृद्धाश्रमों की शरण लेते देखे जा सकते हैं। अभाव, उपेक्षा, अकेलेपन में जीवन का अन्तिम समय बिताने वालों के मरने के बाद लोक लाज से या अन्ध परम्परा के कारण उनकी गति परिवार के लोग दूसरों को भोजन, वस्त्र दान करके सुधारते हैं, उनका श्राद्ध व तर्पण पवित्र नदियों में जाकर करते हैं। ऐसा करके वे अपने पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्णता मानते हैं और अपने को उनके कर्ज से मुक्त कर लेते हैं। यह सब अज्ञानता के कारण हो रहा है, जीवित माता पिता की

www.thearyasamaj.org

सेवा उनकी तृप्ति को अनदेखा कर उन्हें दुःख देने के बाद मरने के बाद उन्हें स्वर्ग, मोक्ष के लिए उनकी शान्ति के लिए श्राद्ध व तर्पण करते हैं, यह कहाँ तक उचित है।

सनातन व्यवस्था में अन्तिम संस्कार अन्त्येष्ठि है जीव की मुक्ति, पुर्नजन्म या मोक्ष तो जीव को उसके अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त होगा। उसके परिवारजन, मित्र या सहयोगी तो उसके शरीर का अन्तिम संस्कार ठीक प्रकार से घृत व सुगंधित पदार्थों से कर सकते हैं, इसके बाद मृतक का कोई सहयोग किसी प्रकार का नहीं कर सकते। नीतिकार ने लिखा है --

नामुत्र हि सहायार्थं पिता--माता च तिष्ठतः।
ना पुत्र दारा न ज्ञाति धर्मतिष्ठति केवलः।।

मृत्यु के समय न पुत्र साथ जाता है न पत्नि न ही रिस्तेदार केवल धर्म ही साथ जाता है।

यदि मरने के पश्चात मृतक के नाम पर उसे स्वर्ग या मोक्ष दिलाने के लिए पूजा--पाठ--तर्पण--तीर्थ स्नान, पिण्ड दान करके उसे सब दिलाया जा सकता है तो फिर प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति को तो अगला जीवन अच्छे से अच्छा उसके वारिस उसके धन से करा देगें। फिर तो परमात्मा की व्यवस्था निरर्थक हो जावेगी उसके न्याय में बाधा उत्पन्न हो जावेगी। **"अवश्य मेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"** का सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक जीव को शुभ--अशुभ कर्मों को भोगना ही पड़ता है यह नष्ट हो जावेगा। न्याय करने, कर्म का फल देने का एकमात्र अधिकार परमात्मा का है, वह उससे छिन जावेगा।

इसलिए अन्धविश्वास व गलत परम्परा को छोड़कर श्राद्ध व तर्पण के सही अर्थ को समझें, उसी अनुसार इसे मनाने में इसकी सार्थकता है।

एक और भ्रान्ती है, श्राद्ध जिन पितरों के लिए करनें की मान्यता है वहां पितर शब्द जो दिवंगत है सिर्फ उनके लिए ही समझा जा रहा है। किन्तु वास्तव में जिनकी मृत्यु हो चुकी है केवल वे ही पितर माने जाते हैं ऐसा नहीं है।

हमसे बड़े माता--पिता, दादा--दादी जो जीवित हैं सभी पितर की श्रेणी में आते हैं। अर्जुन ने युद्ध न करने के लिए योगीराज कृष्ण को यही कहा था -- सामने मेरे बन्धु बान्धव, पितर खड़े हैं इन पर कैसे प्रहार करूं। इसलिए पितर का अर्थ केवल मृतकों से नहीं मानना चाहिए।

कई ग्रंथों में मृतक श्राद्ध व भोजन की निन्दा की गई है।

स्मृतियों ने श्राद्ध भोजन को अच्छा नहीं माना है, उन्होंने श्राद्धी भोजन खाने वालों को दोषी माना है और प्रायश्चित का विधान किया है। आजकल बहुत से विद्वान, ब्राह्मण श्राद्ध भोजन से बचते हैं।

मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति 2--286) का कहना है कि भारद्वाज के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण श्राद्ध भोजन करे तो उसे प्रायश्चित स्वरूप छः प्राणायाम करने चाहिए। यदि वह किसी की मृत्यु के तीन मास से लेकर एक वर्ष के भीतर श्राद्ध भोजन करता है तो उसे एक दिन का उपवास करना चाहिए। इसी प्रकार पृथक--पृथक श्राद्धों में भोजन करने पर चन्द्रायणादि व्रत तक करने का प्रायश्चित निर्धारित किया गया है। वराह पुराण के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण श्राद्ध भोजन खाकर उसे पेट में भरे हुए मर जाय तो वह एक कल्प तक भयंकर नरक में रहता है। फिर राक्षस का जन्म पाता है, तब पाप से छुटकारा मिलता है।

www.thearyasamaj.org

इस प्रकार इस विचार से तो श्राद्ध भोजन एक पाप कर्म है और श्राद्ध भोजी ब्राह्मण पापी होता है, यह स्वतः सिद्ध हो गया है।

मृतक श्राद्ध को श्रेष्ठ कर्म नहीं माना – कुछ ऐसे प्रमाण भी पाए जाते हैं जिनमें मृतक श्राद्ध को सत्पुरूषों द्वारा गर्हित एक निन्दित कर्म माना गया है। उदाहरण के लिए महाभारत में राजा निमि का कथानक है जिसका श्रीमान पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया, निमि ने शोकाकुल होकर स्वपुत्र का श्राद्ध किया और बाद में पश्चाताप करने लगा। यथा –

तत् कृत्वा स मुनि श्रष्ठो धर्म संकरमात्मनः।
पश्चातापेन माता तप्यमानोऽम्यचिन्त यत्।।
अतम् मुनिभिः पूर्व किम्मयेदमनुष्ठितम्।
कथं नु भापेन न मां दहेयुर्ब्राह्मणा इति।

– महाभारत अनु. पर्व अ. 91 लोक 16, 17

मृतक श्राद्ध में प्रदत्त भोजन पितरों को नहीं मिलता पुराणों में ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि मृतक श्राद्ध में दिये गये ब्राह्मण भोजन व पिण्ड आदि का भोजन पितरों को नहीं मिलता। मृतक श्राद्ध समर्थक ब्राह्मणों के इस दावे का कि श्राद्ध में प्रदत्त भोजन पितरों को उनके अगले जन्म में भी मिलता है। खण्ड करने वाली एक कथा भविष्य पुराण में वर्णित है।

कथा – विदर्भ देश में भयेनजीत राजा के राज्य में सुमति नामक ब्राह्मण पत्नि जयश्री के साथ रहता था। जब वे दोनों मरे तो अपने पुत्र के यहां पर ही सुमति बैल बना और उसकी पत्नि कुतिया। सुमति के पुत्र ने जिस दिन अपने माता–पिता का श्राद्ध किया, उसी दिन उसने बैल को खूब मारा और दिनभर भूखा रखा तथा उसकी स्त्री ने कुतिया की कमर तोड़ दी। रात को दोनों (कुतिया और बैल) ने परस्पर वार्तालाप करते हुए कहा – कि इसने व्यर्थ ही श्राद्ध किया, हम तो भूख से तड़प रहे हैं। यह कथा पुराण अ. 78 श्लोक 40, 41 तथा पद्मपुराण उत्तर खण्ड 6 अध्याय 78 में भी आई है।

इसके अतिरिक्त गरूढ़ पुराण में कहा गया है कि उपवास से मरने वाले जहरीले जन्तु के काटने पर हैजे से, आत्म हत्या, गिरने, बांध और पानी में डूबकर मरने वाले, भूचाल, पहाड़ कटने, जंगली जानवरों के द्वारा या बिजली से मरने वाले, दीवार गिरने, खाट पर लेटे हुए मरने वाले, चोर, चाण्डाली के संबंध से मरने वाले, शस्त्र की चोंट से, कुत्ते के काटने से मरने वाले, उपर–नीचे से उच्छिष्ट और विधिहीन मौत मरने वालों को भी श्राद्ध भोजन नहीं मिलता, अतः इनका श्राद्ध नहीं करना चाहिए। जबकि आप जानते हैं अनेक मौतें इसी प्रकार होती हैं, पर आज उनका भी श्राद्ध हो रहा है।

www.thearyasamaj.org

मृतक श्राद्ध और शैयादान – गरूढ़ पुराण प्रेतखण्ड (34–69) पद्य पुराण ने मरने वालों के नाम से शैयादान करने की बड़ी प्रशंसा की है। परन्तु पद्य पुराण में ही इसे एक निन्दित कर्म कहा गया है और शैयादान लेने वाले की निन्दा की गई है। और प्रायश्चित का विधान किया गया है। वहां कहा गया है कि शैयादान वेदों और पुराणों में गर्हित माना गया है और जो लोग इसे लेते हैं वे नरक गामी होते हैं।

गरूढ़ पुराण 2–5–40 से 45 श्लोक तक

लेख में जीवित पितरों के संबंध में उपर बताया गया है। यहाँ इसका तात्पर्य यह नहीं कि मृत पितरों को भूल जावें। वास्तव में मृत पितरों को भी हम सदैव याद रखें, उनके आदर्शों, उनकी अच्छाईयों को याद करते हुए अपने जीवन में उनके सद्‌गुणों, आदर्शों को धारण करने का प्रण करें। उनके प्रति सच्ची श्रद्धा, उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर हम व्यक्त कर सकते हैं। इसी भावना से समाज में हजारों प्रतिमा–मूर्तियों का प्रचलन भी हुआ, हमारे जिन पितरों ने अपने यशस्वी जीवन को व्यतीत कर हमारे परिवार को गौरवान्वित किया है, उनका अनुसरण करना, उनके कार्यों को और आगे बढ़ाना ही श्राद्ध होगा, और उनको श्रद्धांजलि होगी, जो प्रत्येक व्यक्ति को करना ही चाहिए।

आम तौर पर मात्र वर्ष में 16 दिन तक पितरों (पूर्वजों) को संतुष्ट करने के समय को ही श्राद्ध पक्ष माना जाता है। इस अवधि में चील–कौओं आदि पक्षियों या अपने उपास्य देवता तथा ब्राह्मणों को भोजन करवाने, दान देने को ही श्राद्ध माना जाता है। इसके द्वारा दिवंगत आत्माओं के प्रति तर्पण कर उन्हें सन्तुष्ट किया गया माना है, किन्तु हमारे सनातन धर्म में ऐसा नित्य करने को पितृ यज्ञ कहा है। यहीं पर विचार करने की आवश्यकता है।

श्राद्ध का अर्थ – **श्रत् सत्यं धार्यते यया सा श्रद्धा।**

श्रद्धयायत, कियते तत् श्राद्धम्।।

जिससे सत्य को धारण किया जावे उसे श्रद्धा कहते हैं और जो कार्य श्रद्धा से किया जावे उसे श्राद्ध कहते हैं।

आचार्य मनु द्वारा मनु स्मृति में दर्शाया है –

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्ना द्येनो दकेन वा।

पयो मूल फलैवाऽपि पितृभ्यः प्रीतिमावहन।

अर्थात् – गृहस्थ प्रतिदिन पितरों (माता–पिता, पितामह आदि वृद्धजनों को) प्रीतिपूर्वक भोजन, जल, दूध, फल पदार्थ देकर श्राद्ध करे अर्थात् जीवित जनों को तृप्त करना श्राद्ध है। चारों वेदों में मृतक श्राद्ध का कहीं उल्लेख नहीं है।

श्राद्ध का अर्थ यहां होगा **"श्रद्धया पितृभ्यः यत् कियते तच्छाद्धम्"** अर्थात् पितरों के लिए किए जाने वाले कर्म हैं उसे श्राद्ध कहते हैं। पितर शब्द

www.thearyasamaj.org

संस्कृत का जो पा धातु से बना है। पित् शब्द का बहुवचन एक से अधिक पिता पितर होता है। पिता कई प्रकार के होते हैं। जन्मदाता व परमपिता परमात्मा के अतिरिक्त भी पिता हैं।

जनिता चोपनेता च यश्च विद्या प्रयत्छति।
अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृत।।

– चाणक्य नीति

इसी प्रकार ब्रह्मववर्त में दर्शाया –

अन्नदाता भयत्राता, पत्नी तातस्तभवत,
विद्या दाता पचैते पितरो नृणाम्।।

अर्थात् – जन्म देने वाला, उपनयन संस्कार करवाने वाला, विद्या देने वाला, भय से मुक्ति दिलाने वाला ये पांचों पिता हैं। पत्नि के पिता को भी पिता दर्शाया है।

जो सामर्थ्यहीन क्षीण हो उन्हें भी पितर बताया है **"योअपक्षीयते स पितरः** (शतपथ ब्राह्मण 2–1–3–1) अर्थात् जो क्षीण हों वे पितर कहलाते हैं।

तर्पण – उसी प्रकार तर्पण को भी देखें, जो पितर के लिए हम करते हैं। तर्पण का अर्थ होता है तृप्ति, संतुष्टि।

येन कर्मणा विदषो देवान् ऋविन्।
पितृश्च तर्पयन्ति सुयन्ति तत् तर्पणम्।।

अर्थात् – जिस कर्म के द्वारा विद्वान देव ऋषि और पितरों को सुख युक्त कर तृप्त करते हैं उसे तर्पण कहते हैं।

लेख लिखने की भावना यही है कि हम केवल मृतक पितरों तक ही सीमित, न उनके श्राद्ध को ही अपना धर्म व न मानें, जीवित पितरों को महत्व देकर उन्हें सुखी बनावें।

जीवित माता–पिता, गुरू, आचार्य, विद्वान के प्रति श्रद्धावान होना सत्य श्रद्धा करना, उनको अपने द्वारा सेवा, अन्न, धन से, वस्त्र से तृप्त करना ही सच्चे अर्थों में श्राद्ध है, तर्पण है, और यही श्राद्ध करना चाहिए। तर्पण करना है तो श्राद्ध पक्ष के दिनों में ही क्यों ? हम नित्य करें, हमारे शास्त्रों में यही उल्लेख है।

इस भावना के रहने से ही जीवित माता–पिता व पितरों का परिवार में आदर, सत्कार होगा। वे ही तर्पण के अधिकारी हैं, उनकी तृप्ति कर तर्पण की विचारधारा समाज में व्याप्त हो जावे तो अनेकों परिवार में एक सुखद वातावरण निर्मित होगा इन विचारों को ग्रहण करके ही हम सच्चे रूप में श्राद्ध व तर्पण कर सकेगें।

www.thearyasamaj.org

चाणक्य – सूत्रावली

सुखस्य मूलम् धर्मः "सुख का मूल धर्म है।"
धर्मस्य मूलम् अर्थः "धर्म को मूल धन है।"
अर्थस्य मूलम् राज्यम् "धन का मूल राज्य है।"

राज्य मूलम् इन्द्रिय जयः राज्य का मूल धर्म है इन्द्रियों पर संयम यदि राजा संयमी नहीं तो वह विषयों के पथ पर चलकर राज्य को निनष्ट कर डालेगा। इन्द्रिय संयमस्य मूलम् विनयः इन्द्रियों के संयम का मूल विनय है विनयशील इन्द्रियों को संयमित कर सकता है।

विनयस्य मूलम् वृद्धोपसेवा "विनय का मूल विद्वानों की सेवा है विद्वानों के निर्देश के अनुसार चलने से जीवन में विनय की वाटिका महक उठती है। वृद्ध विद्वानों की सेवा जीवन को विनीत और पुनीत बनाती है।

वृद्धोप सेवा से "आयु, विद्या, यश, बल ये चार करतल गत हो जाते है।

स्वास्थ्य के लिए

थोड़ा हंसिए भी –

0 भविष्यफल पढ़ते हुए विकास ने सत्यजीत से पूछा – तुम्हारा क्या विचार है, इस भविष्यफल के बारे में ?

सत्यजीत – मैंने पिछले हफ्ते पढ़ा था कि इस माह आपके साथ ऐसी कुछ घटना होगी, जिससे आपकी बोलती बन्द हो जाएगी।

विकास – तो क्या फिर वैसी कोई घटना हुई ?

सत्यजीत – हॉ मेरा मोबाईल गुम हो गया।

0 एक मित्र दूसरे मित्र से – तुम्हारे पिताजी क्या काम करते हैं ?

दूसरा मित्र – लोगों का सुख–दुःख बांटते हैं।

पहला मित्र – वो क्या सामाजिक कार्यकर्ता हैं ?

दूसरा मित्र – नहीं, डाकियाँ हैं।

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द –

धर्म : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसे धर्म कहते हैं।

स्वर्ग : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।

नरक : जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह नरक कहलाता है।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अर्थात् : हे सर्व भयहर्ता परमात्मन्। मित्र से हमें अभय (अर्थात् भय से अन्य फल) शत्रुं से अभय ज्ञात शत्रु तथा अज्ञात् शत्रु से अभय हो, रात्रि तथा दिन में अभय हो। सब दिशाएँ हमारे लिये हितकारिणी होवें।

सद्गुणों की महत्ता :

गुणैरूत्तमतां यान्ति नोच्चैरासन संस्थितैः।
प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरूड़ायते।। चाणक्य नीति

अर्थात् : गुणों से ही मानव महान होता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।

अद्यैव कुरू यच्छ्रेयो मा त्वां कालोऽत्यगादयम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।

महाभारत शांतिपर्व 164–14

भावार्थ : जो उत्तम कार्य करना हो, वह आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाय। मृत्यु इस बात की प्रतिक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूंरा किया है या नहीं।

www.thearyasamaj.org

सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्

जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।
समय चक्र घूमकर उस बिन्दू के सामने आता है।
पूरा चक्र लगाने के पूर्व जहां से वह जाता है।।
इतिहास भूलों से बिखरता और सजगता से संवरता है।
इसे मापदण्ड मानकर चलते जो उन्हें धोखा नहीं होता है।।
इसलिए स्वर्णिम इतिहास हो, या सुलझे विचार।
दोनों को ही बनाएं जीवन में आधार।।
बड़े बूढ़े ऋषि–मुनियों ने हमें यही समझाया।
नहीं दूजा वेद ज्ञान सा, जग में, यह बतलाया।।
क्योंकि वेद सनातन है, पूर्ण और है पवित्र।
ज्ञान भी उसका जो है यत्र–तत्र–सर्वत्र।।
इसीलिए धर्म शास्त्र प्रणेता मनु ने समझाया।
"सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्" बतलाया।।
अमृत कलश से भरा है यह वेद ज्ञान।
योगेश्वर कृष्ण और मानते थे इसे श्रीराम।।
पर, हमने जीने का ढ़ंग कुछ और अपनाया है।
प्राचीन संस्कृति और सीख को जिसमें भुलाया है।।
भौतिक सुख–शान्ति के वातावरण में।
आधार शून्य बाहरी आवरण में।।
जिसे नवीनता की निशानी मान रहे।
मानो अमृत छोड़ गरल पान पा रहे।।
देखे, मनुष्यता बिखरते जा रही।
दुनियां सिमिटती जा रही।।
पर हम हैं कि पाश्चात्य और पशु सभ्यता में ही लिप्त हैं।
बाहरी सुखों से ही बस तृप्त हैं।।
परन्तु, अज्ञान से भरी ये मानसिकता दुःख की निशानी है।
दुःख भोगना होगा, यदि कीमत अतीत की न जानी है।।
इसलिए अभी भी वक्त है संभल जाओ।
क्योंकि, अतीत और वर्तमान में दूरी न बढ़ाओ।।
जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।

– प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

गायत्री मन्त्र "महामन्त्र और गुरूमन्त्र" क्यों ?

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ – उस प्राण स्वरूप दुःख नाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

गायत्री मन्त्र जिसे महामन्त्र और गुरूमन्त्र भी कहते हैं। ध्यानपूर्वक पढ़ने व समझने से इस मन्त्र से हमें तीन ज्ञानमय बातों का बोध होता है। पहला, परमात्मा का गुण–कर्म व स्वभाव कैसा है। दूसरा, मनुष्य को यह उपदेश दिया है कि उस परमात्मा को हम अपनी अन्तरात्मा में धारण करें। तीसरा, परमात्मा से यह प्रार्थना की गई कि वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

उपरोक्त तीनों ही भावार्थ मनुष्य जीवन के लिए अद्भुत व अमूल्य है। विशेषतः मैं प्रिय पाठकों का ध्यान तीसरे भावार्थ की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिसमें परमात्मा से यह प्रार्थना की है कि वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करें। इसका दूसरा व सरल अर्थ यह भी है कि परमात्मा हमें आत्मचिन्तन करने के लिए प्रेरित करे। मनुष्यों द्वारा आत्मचिन्तन करने का मार्ग अपनाना एक ऐसा कार्य है जो मनुष्य को धर्म, अधर्म, पाप पुण्य, सत्य–असत्य, पवित्र–अपवित्र, अच्छा–बुरा एवं सुख–दुःख ठीक से समझने का ज्ञान प्रदान करता है। इस आत्मज्ञान को आधार मानते हुए ही मनुष्य ने जीवन में यह निर्णय लेना चाहिए कि कौन सा कर्म पुण्य, सत्य, पवित्र, अच्छा, सर्व सुखदायी है। जो कर्म सर्वहिताय व सर्वसुखाय है, इसे करना ही धर्म है। यदि ठीक ऐसा ही जीवन में घटित होता है तो यह मान लिया जाना चाहिए कि गायत्री मन्त्र के तीसरे भावार्थ को आपने आत्मसात कर लिया है। चिन्तन, मनन का यह उपाय आत्मसात करना अपने अन्दर के ज्ञान रूपी दीपक को जलाने के समान है। इस दीपक को कभी भी न बुझने दें। क्योंकि यही आत्मज्ञान ही ज्ञानमय व सही जीवन का प्रारम्भ कर सकता है। समस्त सुखों का कारण अज्ञान है और इसके विपरीत सभी दुःखों का कारण भी **अज्ञान** है।

इस मन्त्र में परमात्मा से सत्यज्ञान की प्रार्थना की गयी है जिससे सत्य पथ पर चलने का सन्देश मिलता है। परमात्मा का ज्ञान पूर्ण निष्पक्ष तथा सत्य से पूर्ण है वही सबका आदिगुरू है, जगत का पहला गुरू है, उसके द्वारा प्रदत्त ज्ञान ही पहला आधार है, इस ज्ञान का देने वाला वही है। वही हमारा सही मार्गदर्शक हो सकता है।

संसार में सत्य ज्ञान से ही जीवन की पूर्णता व सार्थकता है रिश्ते, नाते, धन, दौलत, सम्पत्ति, पद ये सब पूर्ण सुख देने वाले नहीं हैं। सत्य ज्ञान ही पूर्ण सुख का आधार हो सकता है। मन्त्र में भक्ति के पूर्ण भाव, स्तुति, प्रार्थना, उपासना का दर्शन है यही मानव की सर्वोत्तम आकांक्षा है।

इसीलिए इस मन्त्र को महामन्त्र और गुरूमन्त्र कहा है।

– **श्रीधर गोस्वामी**, मंत्री–आर्य समाज, महू

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

बालकों कें लिए विशेष योजना

प्यारे बच्चों,

सबको बहुत–बहुत प्यार भरा नमस्ते ! आशीर्वाद....

बच्चों इस माह से पत्रिका में आपके ज्ञानवर्धन के लिए कुछ बातों को प्रकाशित किया जायेगा। इसे ध्यान से पढ़ें ताकि आपके ज्ञान में तो वृद्धि होगी ही एक और लाभ होगा, आपको पारितोषिक भी मिलेगा। इस प्रतियोगिता में 10 से 18 वर्ष तक के बालक–बालिकाएं भाग ले सकते हैं।

इसके लिए आपको इस पुस्तिकाओं को संभालकर रखना होगा। माह फरवरी में आपको जो पत्रिका मिलेगी उसमें आपसे कुछ प्रश्न पूछे जावेगें, उनके सही उत्तर आपको इन्हीं पुस्तिका में से ढूंढ़ कर देना है।

सही उत्तर प्राप्त होने पर उनका ड्रॉ निकाला जावेगा। जिसमें आने वाले नामों को पारितोषिक प्रदान किए जायेगें। 20 चयनित छात्र/छात्राओं को हर छः माह में इस प्रकार ईनाम प्रदान किए जायेगें।

इसे कहते है आम के आम और गुठलियों के दाम – ज्ञान भी और ईनाम भी।

बच्चों, आप अपनी ओर से भी कोई रचना, लतीफा, कहानी भेज सकते हैं जो ज्ञानवर्द्धक हों, अच्छी होने पर प्रकाशित की जावेगी। स्वरचित कविता, कहानी के साथ आप अपने फोटो भी भेज सकते हैं ताकि समय–समय पर उनको प्रकाशित किया जायेगा। तो फिर तैयार हो जाईए, **ज्ञान और ईनाम पाईए।** बच्चों आप मुझे पत्र पर बाल सन्देश लिखकर इस पते पर पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

तुम्हारी

नीलू दीदी

आर्य समाज, महू (म. प्र.)

दूरभाष 07324–226767, 273201

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

बच्चों, किसी भी बात की यदि सही जानकारी जब हमें नहीं होती है तो हम कभी–कभी वह मान बैठते हैं जो वास्तव में होता नहीं है। ईश्वर के बारे में, धर्म के बारे में ऐसा ही कुछ है। ईश्वर एक है, धर्म भी एक है परन्तु कई ईश्वर और कई धर्म माने जा रहे हैं। ऐसा भ्रम के कारण हो रहा है। उसको बहुत से नाम से पुकारते हैं, इसलिए यह भ्रम फैला है। आओ, इस पर ही चर्चा करते हैं।

समस्त संसार का, समस्त प्राणियों का परमात्मा एक है, परन्तु उसको अनेक नामों से पुकारते हैं।

उसका मुख्य नाम ओ३म् है। परमात्मा के बहुत से नाम होने के कारणों को यदि समझ लेगें तो बात सरलता से समझ में आ जावेगी, कि उसे अनेक नामों से क्यों पुकारते हैं।

नाम किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति अथवा पहचान के लिए उपयोग में लाया जाने वाला संबोधन है। यदि पहचान के लिए नाम नहीं दिए जाते तो बड़ा मुश्किल हो जाता। किसी को कैसे बुलाते, किसी वस्तु या स्थान की जानकारी कैसे लगती ?

इसलिए नाम का महत्व किसी वस्तु के लिए, स्थान के लिए, व्यक्ति की पहचान के लिए होता है। व्यक्तियों की पहचान में भी उसके मुख्य नाम के अतिरिक्त उसके गुण, कर्म, रिश्तों, स्वभाव के कारण बहुत से नाम प्रचलित होते है। जैसे किसी का नाम मोहन है, अब देखें कि मोहन को कितने नाम से पुकारा जा सकता है।

हर बालक का घर का छोटा नाम अलग होता है, यदि घर में सब भाई–बहनों में छोटा है तो उसे छोटू कहकर भी बुलाते हैं। गुड्डू, मुन्ना, मोनू ऐसे कई नाम भी घर में रख लेते हैं। बड़ा होने पर यदि वह डॉक्टर बन गया तो उसे डॉक्टर साहब के नाम से आवाज देगें। यदि वह एक अच्छा गायक है तो गायक के नाम से, व जाति के कारण उपनाम शर्मा, वर्मा, चौहान या जो कुछ भी लिखते हो तो शर्मा या वर्मा, चौहान के नाम से भी पुकारते हैं। यदि दुकानदार है तो सेठजी के नाम से, मन्दिर का पुजारी है तो पुजारी जी के नाम से, कथा प्रवचन करता है तो पण्डितजी के नाम से पुकारेगें।

उनके माता–पिता उन्हें बेटा कहकर, बच्चे पिताजी या पापा के संबोधन से पुकारेगें। इसी प्रकार इसी मोहन को मामा–काका–भाई आदि रिश्तों के संबोधन से पुकारेगें। जिस–जिस संबोधन से आवाज दी जावेगी वह उसका नाम ही कहलावेगा।

www.thearyasamaj.org

अब विचार करे जब एक व्यक्ति जिसका मुख्य नाम मोहन है उसे कितने नामों से पुकारा जा सकता है।

ईश्वर एक है जिसका मुख्य नाम ओ३म् है किन्तु उसके अनेक कार्य, अनेक गुण और अनेक स्वभाव उस ईश्वर के बारे में सोचें, उसके तो अनेक गुण, अनेक कर्म और अनेक स्वभाव हैं, फिर वह अनेक नामों से क्यों नहीं पहचाना जा सकता।

इसीलिए इन अनेक गुण, कर्म, स्वभाव के कारण उस एक ईश्वर को भी अनेक नाम से पुकारते हैं।

वह सृष्टि का निर्माता है इसलिए ब्रह्मा, सब जगह है इसलिए विष्णु, सबसे सम्पन्न है, इसलिए इन सबका कल्याणकारी है, इसलिए शिव सबको शान्ति देता है, इसलिए शनि, सबका पिता है इसलिए परमपिता, जगत का ईश है इसलिए जगदीश आदि अनेक नामों से उसे पुकारते हैं। कहा गया–

एक सद् विप्रा बुहुधा वदन्ति।

अर्थात् – उस एक परमेश्वर को विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं।

देखो बच्चों, हर घर में **"जय जगदीश हरे"** की आरती गायी जाती है। तुम्हें भी याद होगी, उसमें एक पंक्ति यह भी है **"तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति"**। देखा इस आरती में भी ईश्वर को एक कहा है।

इसलिए वह परमात्मा एक ही है, अनेक नहीं इस बात को अच्छी तरह समझ लें तो इससे आगे उसे जानने, पहचाने और उसकी भक्ति करने में भ्रमित नहीं होवेगें और सच्चे ईश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना, उपासना करोगें।

जीवन उपयोगी सीख :–

1. O ! God keep us away from sinfull thought.
   हे परमात्मा बुरे विचारों से हमें दूर रखो।
2. The God is dispaller of miseries.
   भगवान दुःखों को दूर करने वाला है।
3. We should allways be thankfull to God.
   हमें सदैव परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए।
4. Without blasings of God we cannot get anything.
   परमात्मा की कृपा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते।
5. We all are under the marcy of God.
   हम उस परमात्मा के अन्तर्गत ही हैं।

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

2

www.thearyasamaj.org

वैदिक रवि मासिक पत्रिका हेतु सदस्य सूची –

67. श्री रमेशचन्द्र मांगीलाल पाटीदार
68. श्री प्रेमनारायणजी पटेल
69. श्री जीवनसिंह बाबूलाल पाटीदार
70. श्री अशोक कुमार पाटीदार
71. श्री सन्तोष कैलाशचन्द्र पाटीदार
72. श्री शैलेन्द्र कुमार आर एस चौधरी
73. श्री प्रधानजी / मन्त्रीजी, आर्य समाज, बड़नगर
74. श्री रवि लक्ष्मीनारायण आर्य
75. श्री प्रधानजी / मन्त्रीजी, आर्य समाज, कानड़
76. श्री शुभम पिता दिनेशजी आर्य
77. श्री सत्यनारायण ईश्वरलाल जी
78. श्री रामप्रसाद बद्रीलालजी
79. श्री हरिनारायण लक्ष्मीनारायण जी
80. श्री योगेन्द्र पिता भेरूलाल जी
81. श्री अजय पिता घवलकिशोर जी
82. श्री गोपाल रामप्रसाद जी राठौर
83. श्री सत्यनारायण ओमप्रकाशजी
84. श्री हरिशजी शर्मा, इन्दौर
85. श्रीमती प्रभाजी शर्मा, इन्दौर
86. श्री गोविन्दसिंह चौहान, ग्वालियर
87. श्री रामगोपाल जी आर्य, उन्नाव उ. प्र.

क्रमशः.............

7 वॉं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

भारत के बाहर विदेशों में होने जा रहे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में 7 वां अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दक्षिण अफ्रिका में दिनांक 28, 29 एवं 30 नवम्बर 2013 को सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने वाले इच्छुक व्यक्ति अपने नाम शीघ्र भेजने हेतु व विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें –

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल उपप्रधान मोबा. 09824072509

श्री विनय आर्य उपमन्त्री मोबा. 09958174441

भवदीय :

प्रकाश आर्य

मन्त्री : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

मोबा. 9826655117

www.thearyasamaj.org

अन्तरंग बैठक सम्पन्न

दिनांक 15/9/2013 आर्य समाज उज्जैन में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सभी संभागों के अन्तरंग सदस्य व अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभा में सभी सदस्यों ने प्रगतियुक्त विचारों के साथ भाग लिया, विचार रखे। सभा की ओर से विगत 3 माह की गतिविधि पर प्रकाश डाला जिस पर सबने संतोष व्यक्त किया। एक अच्छे उत्साह भरे वातावरण में सभा सम्पन्न हुई।

सभा की ओर से गुरूकुल कांगड़ी, को 21,000/–, गुरूकुल होशंगाबाद को 51,000/–, आदिवासी क्षेत्र में संचालित विद्यालय सनकोटा हेतु 10,000/– तथा आर्य समाज बड़वानी में हुए कार्यक्रम के लिए 5,000/– के दान की घोषणा की। उपस्थित सदस्यों ने अपनी ओर से गुरूकुल में भेजने हेतु उत्साहपूर्वक दान दिया।

0 सभा की ओर से आर्य वीर दल और प्रचार कार्य को प्रमुखता देने का निर्णय लिया, संभागीय स्तर पर संभाग के उपप्रधान व उपमंत्री तथा अन्तरंग सदस्य बैठकर जिले के कार्य को व्यवस्थित और दृढ़ता से करने के लिए जिले व तहसील के प्रभारी मनोनीत कर सकेगें ताकि प्रत्येक जिले और तह. स्तर पर प्रचार–प्रसार और संगठन की दृष्टि से और उनके माध्यम से प्रचार प्रसार व संगठन का कार्य और तीव्रता से बढ़ सके।

0 विवाद निवारण समिति की ओर से उज्जैन व दयानन्दगंज, इन्दौर के संबंध में जांच रिपोर्ट प्रस्तुत की, दयानन्दगंज इन्दौर की वर्तमान कार्यकारिणी भंग तथा तदर्थ समिति का मनोनयन करने का निर्णय लिया गया। आपस में चर्चा हो जाने से उज्जैन का भी कोई विवाद नहीं रहा।

0 सभा के कार्य हेतु सभा में सभा से संलग्न श्री कमल किशोर शास्त्री, झाबुआ हेतु श्री खेमचन्द, बरसिंग तथा अस्थायी रूप से संजय आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य, पवन शास्त्री सनकोटा हैं। इनके अतिरिक्त श्री डॉ. रामपालजी, आचार्य प्रभामित्रजी, आचार्य अनिल व्यास, पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'', डॉ. अखिलेश शर्मा, पं. अमरसिंहजी ''भजनोपदेशक'' श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री, ने समय–समय पर सभा को अपना समय देने की स्वीकृति प्रदान कर रखी है। प्रचार समिति से सम्पर्क करके इन विद्वानों का भी लाभ आर्य समाज व अपने स्थानीय कार्यक्रमों में कर सकते हैं।

आर्य समाज मुरैना में कार्यक्रम

आर्य समाज के 60 वें वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में भव्य वेदकथा का आयोजन आचार्य सत्येनजी मेरठ, आचार्य कड़कदेव एवं पं. रविदेव आर्य, बुलन्द शहर एवं पूज्य स्वामी ओंकारानन्दजी आगरा से पधार रहे हैं।

उक्त कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील धर्मप्रेमी जनता से हैं।

विनीत :

केशवसिंह आर्य — प्रधान एवं **विजयेन्द्र कुमार श्रीवास्तव** — मन्त्री

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

www.thearyasamaj.org

प्रचार समाचार –

सभा की ओर से प्रचार कार्य

सभा की ओर से विभिन्न स्थानों पर विगत 3 माह में प्रचार कार्य किया गया। स्वामी देवव्रतजी, प्रधान संचालक आर्य वीर दल द्वारा भोपाल, रतलाम, उज्जैन में कार्यकर्ताओं को आध्यात्मिक, आर्य समाज व संगठन संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। आचार्य प्रभामित्र जी द्वारा सिहोर में 5 दिवसीय कार्यक्रम पं. अमरसिंहजी द्वारा दिनांक 10 से 26 सितम्बर तक उज्जैन, इन्दौर, भोपाल संभाग में प्रचार कार्य सभा में पदस्थ श्री कमलकिशोर जी द्वारा बड़नगर, मौलाना क्षेत्र में प्रचार। बड़वानी में 7 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन तथा कुआं, बड़वानी, कसरावद हेतु श्री पवन शास्त्री का नियमित प्रचार। इन्दौर, महू, कोदरिया, हरसोला, दतोदा तथा तहसील के अन्य गांवों में पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'', पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री, संजय आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य द्वारा 45 से अधिक स्थानों पर यज्ञ एवं वेद प्रचार सभा की ओर से आगामी माह में भी प्रचार कार्य को कार्यक्रम बन चुका है।

आर्य वीर दल – चार स्थानों पर प्रशिक्षण शिविर लगाए ग्राम सुवासा, मौलाना, कुआं, उज्जैन एवं वर्तमान में रतलाम में शिविर लग चुके हैं। इसके पश्चात धार, देवास और पुनः उक्त स्थानों पर जहां नई शाखा है उसका प्रचार कार्य होगा।

सभा की ओर से पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री, श्री कमलकिशोर शास्त्री, संजय आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य निरन्तर प्रचार कार्य में संलग्न हैं। साथ में साहित्य विक्रय हेतु फिल्म प्रदर्शन के साथ प्रोजेक्टर सहित वेद रथ भी प्रचारार्थ भ्रमण कर रहा है।

0 दिनांक 14 सितम्बर को आर्य समाज उज्जैन में कार्यकर्ता सम्मेलन हुआ जिसमें लगभग 40 सदस्यों ने बैठक में भाग लिया उपस्थित सदस्यों ने सभा के दौरान कई महत्वपूर्ण बातों का श्रवण किया, उनके संबंध में स्पष्टिकरण प्राप्त किया और प्रचार कार्य को सशक्त बनाने का संकल्प लिया।

0 वैदिक रवि में निरन्तर पाठकों की संख्या बढ़ती जा रही है तथा वैदिक रवि के पृष्ठों में भी वृद्धि की गई है।

वैदिक विचारों का प्रसारण आस्था चैनल पर

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि ''विचार ज्ञान प्रवाह'' की इसी श्रृंखला में विचार द्वारा निर्मित वैदिक कार्यक्रमों का अब दैनिक प्रसारण अस्था चैनल पर 25 अगस्त 2013 से सायं 8 से 8.30 बजे तक शुरू हो चुका है। जिसमें उच्च कोटि के प्रवचन, वैदिक भजन एवं वैश्विक मूल्यों को उजागर करती लघु फिल्मों को प्रसारित किया जा रहा है।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज देवास की ओर से विनम्र अपील

आर्य समाज मन्दिर देवास का भव्य स्तर पर निर्माण कार्य चल रहा है इसमें अभी तक दुकानों का निर्माण हो चुका है। आर्य समाज सत्संग हॉल, यज्ञशाला, अतिथि कक्ष, कार्यालय, स्नानागार आदि का निर्माण शेष है। इस हेतु दानी महानुभावों से अपील है कि इस विशाल व भव्य निर्माण में दान देकर अनुग्रहीत करें अभी तक लगभग 45 लाख रूपए लग चुका हैं।

यह भी निवेदन है कि बैंक ब्याज की दर पर समाजें या व्यक्तिगत रूप से यदि ऋण भी महानुभाव प्रदान करें तो वह ऋण 1 वर्ष की अवधि में वापिस लौटा दिया जावेगा।

कृपया उपरोक्त निवेदन पर ध्यान देवें।

आर्य सुरेन्द्र कुमार कसेरा — मन्त्री
आर्य वेदप्रकाश सेन — कोषाध्यक्ष
आर्य प्रेमनारायण पाटीदार — प्रधान

षष्ठम गायत्री महायज्ञ

महू। प्रति दो वर्ष में आयोजित होने वाले छठे गायत्री महायज्ञ का आयोजन आगामी 25 से 31 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। यह निर्णय गायत्री महायज्ञ की बैठक में लिया गया। ज्ञातव्य है कि इस आयोजन की पहचान न केवल महू और आसपास के क्षेत्र में है अपितु पूरे भारतवर्ष और कुछ विदेशों में भी इसकी ख्याति फैली है। कार्यक्रम में संभावित विद्वानों में पूज्य आचार्य बलदेवजी (स्वामी रामदेवजी के गुरू), स्वामी रामदेवजी, डॉ. वेदप्रतापजी वैदिक, डॉ. रामप्रकाशजी (राज्य सभा सदस्य एवं कुलपति गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), डॉ. वागिश शर्मा, डॉ. रामपालजी (जयपुर), डॉ. अखिलेश शर्मा (लातूर), डॉ. नन्दिताजी शास्त्री (बनारस), पाणिनी महाविद्यालय की छात्राएं, श्री महेन्द्र पाल (देहली)। संगीत व भजन प्रस्तुति हेतु पं. भानुप्रताप (उत्तर प्रदेश) एवं अन्य आध्यात्म, समाज व राष्ट्रीय चिन्तक, विद्वानों, सनातन धर्म के मूर्धन्य सन्यासियों को आमन्त्रित किया है। लगभग सभी के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

सूचनाः सार्वदेशिक सभा और म.भा.आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में आर्य युवक–युवती परिचय सम्मेलन 19 जनवरी 2014 को आर्य समाज मल्हारगंज में आयोजित किया गया है इच्छुक सदस्य आर्य समाज मल्हारगंज इंदौर (दक्ष देव गौड़–09691807070) अथवा श्री अर्जुन देव चडढा कोटा राजस्थान (09414187428) से फार्म प्राप्त करें।

www.thearyasamaj.org

सामाजिक उन्नति के साधन
संगठन सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १।।

अर्थ - हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें है कीजिए धन वृष्टि को ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २।।

अर्थ - प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो,
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ।

समानो मंत्रः समितिः समानी-समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। ३।।

अर्थ - हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सुहासति ।। ४।।

अर्थ - हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा,
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।

महामृत्युञ्जय मन्त्र :

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात् ।।

शांतिमंत्र

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शन्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

www.thearyasamaj.org

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

वैदिक रवि के उद्देश्य व नियम

1. वैदिक रवि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आमुख पात्र है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इसका प्रमुख उद्देश्य है।
2. यह पत्रिका माह की 27 तारीख को प्रकाशित होती है।
3. आगामी माह की 05 तारीख तक पत्रिका यदि पाठकों तक न पहुंचे तो डाक विभाग द्वारा या कार्यालय से पत्रिका के संबंध में जानकारी प्राप्त करें।
4. पत्रिका का मूल्य 20 रुपये प्रत्येक प्रति, वार्षिक सदस्यता शुल्क 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रु है। आजीवन सदस्यता का तात्पर्य 15 वर्ष की अवधि तक के लिए सदस्यता से है।
5. सदस्यता शुल्क के ड्राफ्ट, चेक, मनीआर्डर आदि 'मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भोपाल में देय होने चाहिए।
6. पत्रिका में छपवाने हेतु भेजे गये लेख, कवितायें आदि माह की 10 तारीख तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए उसके बाद प्राप्त होने वाले लेख पत्रिका के विचारार्थ होंगे। विशेष पर्व हेतु भेजे लेख एक माह पूर्व भेजने का कष्ट करें। पत्रिका हेतु भेजे गये लेख साफ एवं स्वच्छ लिपि में कागज पर एक ही ओर लिखे हों यदि टंकित लेख हों तो ज्यादा अच्छा होगा।
7. पत्रिका में आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा से संबंधित समाचार, सामाजिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय हिंत के लेख, समालोचनात्मक निबंध आदि विषयों की सामग्री ही प्रकाशित की जाती है। चमत्कार, पाखण्ड युक्त लेख सामग्री स्वीकार्य नहीं होती।
8. पत्रिका हेतु भेजे गए लेख आदि को संपादित कर लघुकृत करने, छापने अथवा न छापने के सर्वाधिकार संपादक के है इस संबध में कोई पत्राचार स्वीकार नहीं होगा।
9. पत्रिका में छपे लेखों के लेखकों को उनके दिये हुए पते पर पत्रिका का वह अंक जिसमें लेख छपा है निःशुल्क भेजा जाता है। अप्राप्त होने पर वैदिक रवि कार्यालय या डाक विभाग से सम्पर्क करें।
10. पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास हेतु आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

प्रधान संपादक
वैदिक रवि
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) 462003

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल ऑफसेट प्रेस, तलैया से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक प्रकाश आर्य

प्रति, ______

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल 462003 (म.प्र.)

[redacted]